



दक्षिण एशिया में रणनीतिक विवाद: चीन के बढ़ते प्रभाव और भारत के प्रतिरोधक दृष्टिकोणों का तुलनात्मक विश्लेषण

¹पंकज कुमारी और ²डॉ. विकास कुमार शर्मा

¹शोधार्थी (पीएच.डी.), राजकीय महाविद्यालय बूंदी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान

²सह आचार्य (राजनीति विज्ञान), स्वर्गीय पंडित नवल किशोर शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा, राजस्थान

शोध सार :

भारत और चीन के बीच दक्षिण एशिया में चल रही रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह प्रतिस्पर्धा अब केवल सीमा विवादों तक सीमित न रहकर आर्थिक, सैन्य, कूटनीतिक और वैचारिक क्षेत्रों में फैल चुकी है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव जैसी परियोजनाओं ने भारत की पारंपरिक क्षेत्रीय भूमिका को चुनौती दी है, जबकि भारत ने “एकट ईस्ट” और “नेबरहुड फर्स्ट” नीतियों के माध्यम से संतुलन साधने का प्रयास किया है। सीमा पर गलवान जैसी घटनाएँ और हिंद महासागर में समुद्री वर्चस्व की होड़ इस संघर्ष को और तीव्र बनाती हैं। वैश्विक मंचों पर भी दोनों देशों की प्राथमिकताएँ अलग-अलग हैं, जिससे टकराव की स्थिति बनती है। मीडिया, जनमत और सॉफ्ट पावर के क्षेत्र में भी दोनों देश अपनी वैश्विक छवि को मज़बूत करने की कोशिश कर रहे हैं—भारत लोकतंत्र और संस्कृति के ज़रिए, और चीन आर्थिक निवेश और प्रचार तंत्र के माध्यम से। यह अध्ययन दर्शाता है कि यह प्रतिस्पर्धा केवल दक्षिण एशिया तक सीमित न रहकर वैश्विक शक्ति संतुलन को भी प्रभावित कर रही है।

मुख्य शब्द : भारत-चीन संबंध, दक्षिण एशिया, रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, वैश्विक मंच, कूटनीति, सीमा विवाद

1. प्रस्तावना

भारत और चीन वर्तमान समय में न केवल एशिया की दो बड़ी शक्तियाँ हैं, वैश्विक राजनीति के भी सक्रिय निर्णायक बन चुके हैं। इन दोनों देशों के बीच की प्रतिस्पर्धा अब केवल सीमाओं, सैन्य शक्ति या व्यापारिक हितों तक सीमित न रहकर यह बहुआयामी रूप ले चुकी है, जिसमें रणनीतिक संसाधनों, समुद्री प्रभुत्व, वैश्विक मंचों पर नेतृत्व, सॉफ्ट पावर, मीडिया और जनमत जैसे आयाम शामिल हैं (फेइहोंग झा, 2025; श्याम सरण, 2022)। दक्षिण एशिया में चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) जैसी परियोजनाओं ने पाकिस्तान, श्रीलंका और नेपाल जैसे देशों के माध्यम से भारत की पारंपरिक भूमिका को चुनौती दी है (हर्ष वी पंत, 2021)। वहीं, भारत ने “एक्ट ईस्ट” और “नेबरहुड फर्स्ट” जैसी नीतियों के ज़रिए क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर अपनी रणनीतिक उपस्थिति को मज़बूत करने का प्रयास किया है (Drishti IAS, 2025)।

सीमा विवाद, विशेषकर अक्साई चिन, अरुणाचल प्रदेश और गलवान घाटी जैसे क्षेत्रों में बार-बार होने वाले टकराव, इस प्रतिस्पर्धा को सैन्य तनाव का रूप देते हैं (जाखड़, 2020)। साथ ही, हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में नौसैनिक प्रभुत्व को लेकर भी दोनों देशों के बीच सामरिक संतुलन की प्रतिस्पर्धा स्पष्ट देखी जा सकती है। संयुक्त राष्ट्र, BRICS और WTO जैसे वैश्विक मंचों पर भारत और चीन अपनी-अपनी रणनीतियाँ अपनाते हैं, जहाँ वे विकासशील देशों की आवाज़ बनने की कोशिश करते हैं, लेकिन अक्सर उनकी प्राथमिकताएँ टकरा जाती हैं (जोरावर दौलत सिंह, 2020; श्याम सरण, 2022)। इसके साथ ही, मीडिया और सॉफ्ट पावर जैसे क्षेत्र, जो पहले केवल सांस्कृतिक प्रभाव के साधन माने जाते थे, अब रणनीतिक हथियार के रूप में उभरे हैं। जहाँ चीन कंप्यूशियस संस्थानों और सरकारी मीडिया के ज़रिए अपनी छवि गढ़ता है, वहीं भारत योग, लोकतंत्र और विविध संस्कृति के ज़रिए अपनी अंतरराष्ट्रीय पहचान को मज़बूत करता है (Drishti IAS, 2025)।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारत और चीन के बीच चल रही इस बहुआयामी प्रतिस्पर्धा का विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार यह संघर्ष दक्षिण एशिया की राजनीति को प्रभावित कर रहा है और वैश्विक शक्ति संतुलन को नए रूप में ढाल रहा है।

2. साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा का उद्देश्य यह जानना होता है कि विषय पर अब तक क्या अध्ययन हो चुका है और वर्तमान अध्ययन उसमें क्या नवीनता ला सकता है। भारत-चीन संबंधों को लेकर अनेक लेखकों और संस्थाओं ने ऐतिहासिक, राजनयिक, भू-राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से गंभीर अध्ययन किया है। यह अध्याय उन्हीं प्रमुख स्रोतों की विश्लेषणात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है, जो इस शोध पत्र की बौद्धिक नींव को मज़बूत बनाते हैं।

2.1 भारत-चीन संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

‘इंडिया एंड चाइना ए न्यू एरा ऑफ स्ट्रैटेजिक पार्टनर्स’, बताती हैं कि भारत और चीन के संबंध प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक एवं व्यापारिक रहे हैं, लेकिन स्वतंत्रता के बाद पंचशील सिद्धांतों के माध्यम से इस संबंध को आधुनिक रूप देने का प्रयास हुआ। फिर भी साल 1962 के युद्ध ने उस विश्वास को तोड़ दिया और दोनों देशों के बीच अविश्वास की खाई गहरी हो (गईनीता लाल, 2016)। मनीष चंद (2015), ‘भारत और चीन संबंध: बदलते रिश्ते’, इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि चीन की साम्यवादी नीति और भारत की लोकतांत्रिक सोच ने द्विपक्षीय रिश्तों को हमेशा वैचारिक टकराव की स्थिति में रखा है।

‘भारत और चीन के बीच पंचशील समझौता क्या है?’, रेखांकित करता है कि पंचशील समझौता एक नैतिक आधार था, लेकिन चीन ने इसका पालन केवल रणनीतिक हितों की पूर्ति के लिए किया। भारत की ओर से इसे दीर्घकालिक मित्रता का साधन माना गया, जिससे एकतरफा नुकसान हुआ (Harbinger Singh, 2020)। “1962 का भारत-चीन युद्ध”, इस युद्ध को भारत की विदेश नीति का निर्णायक मोड़ मानते हैं, जिससे भारत ने अपनी सुरक्षा नीति में बुनियादी परिवर्तन करना शुरू किया और चीन के प्रति दृष्टिकोण में यथार्थवादी बदलाव आया (न्यूजस (2022))।

2.2 समकालीन द्विपक्षीय संबंध और प्रमुख विवाद

माया गुप्ता (2015), ‘भारत-चीन संबंधों में संघर्ष - दक्षिण चीन सागर’, यह स्पष्ट करता है कि दक्षिण चीन सागर जैसे समुद्री क्षेत्रों में चीन की दखलअंदाजी भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए खतरा बनी है। भारत की ‘एक्ट ईस्ट’ नीति और सामुद्रिक भागीदारी की रणनीति को चीन एक चुनौती के रूप में देखता है। ‘भारत-चीन प्रतिस्पर्धा: पड़ोसी देशों का दृष्टिकोण’, यह विश्लेषण करते हैं कि नेपाल, श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों के साथ चीन की बढ़ती निकटता भारत के लिए रणनीतिक असंतुलन की स्थिति पैदा कर रही है (शिवमूर्ति एंड्रिया गौतम, 2022)।

‘भारत-चीन सीमा विवाद: अकसाई चिन से तवांग तक’, में उल्लिखित है कि सीमा रेखा पर दोनों देशों के बीच बार-बार तनाव पैदा होते हैं, जिससे न केवल सैन्य स्तर पर, कूटनीतिक वार्ता भी प्रभावित होती है।



चित्र 3: भारत-चीन सीमा विवाद का मानचित्र (Rahman, 2023)

अकसाई चिन और अरुणाचल जैसे क्षेत्रों पर दावे इस तनाव को और गंभीर बनाते हैं (सैनग, 2022)। कल्हा, रंजीत सिंह (2014), 'इंडिया चाइना बाउंड्री ईश्यूज', यह दर्शाते हैं कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) की अस्पष्टता और ऐतिहासिक दस्तावेजों की भिन्न व्याख्या विवादों को जटिल बनाती है, जिससे स्थायी समाधान कठिन होता जा रहा है।

2.3 दक्षिण एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव

'पॉलिटिक्स एंड जियोपॉलिटिक्स', बताते हैं कि चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) नीति ने दक्षिण एशिया में चीन की आर्थिक पहुँच को बढ़ाया है। पाकिस्तान, श्रीलंका और नेपाल जैसे देशों में चीन के निवेश को भारत अपनी क्षेत्रीय संप्रभुता के लिए खतरा मानता है (हर्ष वी पंत, 2021)। Shyam Saran (2022), 'चीन, भारत और विश्व को कैसे देखता है', में अध्ययन से पता चलता है कि चीन अपनी आर्थिक मदद को रणनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल करता है, जिससे छोटे देशों की स्वतंत्र विदेश नीति सीमित हो जाती है।

'China-India ties across the past and into the future', लिखते हैं कि दक्षिण एशिया चीन के लिए केवल व्यापारिक ही न होकर, सैन्य और राजनीतिक महत्व का भी क्षेत्र है। भारत की परंपरागत नेतृत्व भूमिका को चुनौती देने के लिए चीन एक वैकल्पिक शक्ति के रूप में उभर रहा है (फेइहोंग झा, 2025)। जोरावर दौलत सिंह (2020), 'इंडिया चाइना रिलेशंस इन ए मल्टीपोलर वर्ल्ड', बताते हैं कि भारत को इस प्रतिस्पर्धा का उत्तर केवल द्विपक्षीय नीति से न होकर बहुपक्षीय मंचों और वैकल्पिक सहयोग से देना होगा।

2.4 भारत की रणनीतिक प्रतिक्रियाएँ

'कंटेस्टेड लैंड्स', में उल्लिखित हैं कि भारत ने चीन की आक्रामकता का उत्तर सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कों, पुलों और सुरंगों जैसे बुनियादी ढाँचे को मजबूत करके दिया है। भारत की सेना अब उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में लम्बे समय तक टिकने की तैयारी में है (मरूफ रज़ा, 2022)। Drishti IAS (2025), 'भारत-चीन संबंधों की जटिलता और भविष्य', इस ओर संकेत करता है कि भारत अब केवल सैन्य प्रतिक्रिया न करके कूटनीतिक और आर्थिक स्तर पर भी प्रतिस्पर्धा कर रहा है।

'भारत-चीन सीमा विवाद', विश्लेषित करता है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारत की ओर से किए जा रहे सैन्य जमावड़े और बुनियादी ढाँचों के विस्तार ने सामरिक संतुलन को मजबूत किया है (जाखड़ पी. (2020)। 'इंडिया एंड चाइना', यह भी इंगित करती है कि भारत अब BIMSTEC, QUAD जैसे बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से चीन को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है, जिससे एक स्थायी रणनीतिक प्रतिरोध खड़ा किया जा सके (नीता लाल, 2016)।

3. रणनीतिक संसाधनों पर भारत-चीन प्रतिस्पर्धा

भारत और चीन के बीच रणनीतिक संसाधनों को लेकर प्रतिस्पर्धा 21वीं सदी के भू-राजनीतिक परिदृश्य की एक प्रमुख विशेषता बन चुकी है। यह प्रतिस्पर्धा पारंपरिक सैन्य शक्ति या सीमा विवादों तक सीमित न रहकर ऊर्जा, खनिज, जल संसाधन, समुद्री मार्गों और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों जैसे रणनीतिक संसाधनों पर नियंत्रण की दिशा में केंद्रित हो चुकी है। दोनों देशों की जनसंख्या और आर्थिक आवश्यकताएं तेजी से बढ़ रही हैं, जिससे संसाधनों की मांग भी अत्यधिक बढ़ी है। इसी संदर्भ में चीन और भारत अपने प्रभाव क्षेत्र में इन संसाधनों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक साझेदारियाँ और निवेश कर रहे हैं (फेइहोंग झा, 2025)।

चीन ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से श्रीलंका, पाकिस्तान और नेपाल जैसे देशों में गहरे आर्थिक निवेश किए हैं। हम्बनटोटा बंदरगाह को 99 वर्षों की लीज़ पर लेना, ग्वादर बंदरगाह को विकसित करना और नेपाल में बुनियादी ढाँचे को प्रायोजित करना चीन की उस नीति का हिस्सा है जिसके तहत वह संसाधनों के साथ-साथ समुद्री और स्थलीय गलियारों पर भी प्रभाव चाहता है (हर्ष वी पंत, 2021)। यह निवेश दीर्घकालिक दृष्टि से चीन को केवल आर्थिक ही नहीं, सामरिक लाभ भी प्रदान करते हैं, जिससे दक्षिण एशिया में भारत की पारंपरिक भूमिका को चुनौती मिल रही है।

भारत इस प्रतिस्पर्धा को गंभीरता से लेते हुए कई स्तरों पर रणनीतिक उत्तर दे रहा है। ईरान में चाबहार बंदरगाह का निर्माण, मध्य एशिया के देशों से ऊर्जा सहयोग, और मंगोलिया में खनिज परियोजनाएँ - ये सभी भारत की चीन को संतुलित करने की रणनीति का हिस्सा हैं (मरूफ रज़ा, 2022)। भारत की “एकट ईस्ट नीति” और “नेबरहुड फर्स्ट” नीति के तहत पूर्व और दक्षिण एशिया में भारत ने जापान, वियतनाम और इंडोनेशिया जैसे देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया है, जिससे वह चीन की क्षेत्रीय बढ़त को संतुलित कर सके।

रणनीतिक संसाधनों पर यह प्रतिस्पर्धा केवल भू-क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन द्वारा बनाए जा रहे बांधों से भारत की पूर्वोत्तर क्षेत्र की जल सुरक्षा पर खतरा उत्पन्न हो रहा है एवं चीन अफ्रीका में कोबाल्ट, यूरेनियम और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के विशाल भंडारों पर अधिकार स्थापित कर रहा है, जिससे उसकी तकनीकी और औद्योगिक बढ़त और सुदृढ़ होती जा रही है (श्याम सरण, 2022)। इसके उत्तर में भारत ने भी अफ्रीकी देशों के साथ साझेदारियाँ बढ़ाई हैं, लेकिन संसाधनों की दौड़ में चीन की पूंजी और तेज़ी अब तक भारत से कहीं आगे दिखती है। इसलिए रणनीतिक संसाधनों पर भारत-चीन प्रतिस्पर्धा आने वाले समय में केवल आर्थिक या कूटनीतिक संघर्ष नहीं रहेगी, यह दोनों देशों के वैश्विक नेतृत्व और प्रभावक्षेत्र की दिशा तय करने वाली होगी।

भारत और चीन की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का एक महत्वपूर्ण पक्ष अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में खनिज संसाधनों की दौड़ भी है। चीन ने अफ्रीका के देशों—जैसे कि कांगो, नाइजर और जाम्बिया—में कोबाल्ट, लिथियम और तांबा जैसी दुर्लभ धातुओं पर अधिकार जमाने के लिए भारी निवेश किया है। चीन की कंपनियाँ इन क्षेत्रों में दीर्घकालिक खनन अनुबंधों और बुनियादी ढाँचा विकास के बदले संसाधनों तक विशेष पहुँच प्राप्त कर रही हैं (श्याम सरण, 2022)। इसके विपरीत, भारत की उपस्थिति तुलनात्मक रूप से सीमित रही

है, लेकिन अब वह अफ्रीकी यूनियन और IORA जैसे मंचों के माध्यम से ऊर्जा और खनिज सहयोग को सुदृढ़ करने की दिशा में सक्रिय हो रहा है (Drishti IAS, 2025)।

इसी प्रकार, लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों में भी जल संसाधनों पर नियंत्रण को लेकर दोनों देशों की रणनीतियाँ टकराती हैं। चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर “मेगा हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट्स” शुरू कर चुका है, जिससे भारत की निचले प्रवाह वाली क्षेत्रों की जल-निर्भरता पर संकट गहराने की आशंका है (हर्ष वी पंत, 2021)। इसके उत्तर में भारत ने उत्तर-पूर्व राज्यों में जलविद्युत परियोजनाओं, जल भंडारण क्षमता और निगरानी तकनीकों को प्राथमिकता देना शुरू किया है। इन प्रतिस्पर्धात्मक प्रयासों ने जल सुरक्षा को भी एक नए रणनीतिक संसाधन के रूप में प्रस्तुत कर दिया है, जो केवल आंतरिक विकास का विषय न होकर भू-राजनीतिक स्थिरता का कारक बनता जा रहा है। नीचे दी गई तालिका संसाधनों पर किए निवेश का वर्णन करती हैं :

सारणी 1 : भारत-चीन रणनीतिक संसाधन निवेश तुलना		
क्षेत्र/ संसाधन	भारत	चीन
अफ्रीका में निवेश	\$11 बिलियन (मुख्यतः ऊर्जा और निर्माण)	\$155 बिलियन (खनन, ऊर्जा, परिवहन)
दुर्लभ धातुएँ	सीमित-ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका में आंशिक उपस्थिति	कांगो और जाम्बिया में कोबाल्ट, लिथियम पर वर्चस्व
जल परियोजनाएँ	60+ जलविद्युत योजनाएँ पूर्वोत्तर भारत में	ब्रह्मपुत्र पर 3+ मचेगा जैम निर्माणाधीन
मध्य एशिया में तेल सहयोग	ईरान, उज़बेकिस्तान, कज़ाखस्तान से बढ़ता संबंध	तुर्कमेनिस्तान और कज़ाखस्तान में बड़ी हिस्सेदारी

4. सीमा विवाद एवं गलवान संघर्ष

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद का इतिहास लम्बा और जटिल रहा है, जिसकी जुड़े 1962 के युद्ध तक जाती हैं। इस संघर्ष का सबसे बड़ा कारण वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) की अस्पष्टता है, जिससे दोनों देश अलग-अलग मानचित्रों के अनुसार स्वीकारते हैं (कल्हा, 2014)। अक्साई चिन को चीन अपना हिस्सा मानता है, जबकि भारत इसे जम्मू-कश्मीर का अभिन्न अंग मानता है। दूसरी ओर, चीन अरुणाचल प्रदेश को ‘दक्षिण तिब्बत’ कहकर दावा करता है, जबकि भारत इसे पूर्ण रूप से अपने राज्य का हिस्सा मानता है (सैनग, 2022)। यह द्वैध दृष्टिकोण सीमा पर लगातार तनाव की स्थिति को जन्म देता है।

साल 2020 में गलवान घाटी में हुआ संघर्ष इस पुराने विवाद का सबसे उग्र रूप था। यह झड़प उस समय हुई जब भारत ने पैंगोंग त्सो झील और गलवान क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे का निर्माण तेज़ किया, जिसे

चीन ने आपत्ति के रूप में देखा (जाखड़, 2020)। इस हिंसक टकराव में भारत के 20 सैनिक शहीद हुए और चीन ने भी अपने कुछ सैनिकों की मृत्यु स्वीकार की, उसकी ओर से स्पष्ट संख्या नहीं बताई गई (Drishti IAS, 2025)। इस घटना ने लगभग 45 वर्षों में पहली बार भारत-चीन सीमा पर सैनिकों की मृत्यु को चिन्हित किया, जिससे दोनों देशों के संबंधों में अविश्वास और गहरा हो गया।

गलवान संघर्ष के बाद भारत ने अपनी रणनीतिक तैयारी और ज़मीनी प्रतिक्रिया को और मज़बूत किया। सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कों, पुलों और सैन्य चौकियों का निर्माण बढ़ा दिया गया, ताकि सैनिकों की आवाजाही तेज़ हो और ऊँचाई वाले इलाकों में टिके रहने की क्षमता बढ़े (मरुफ रज़ा, 2022)। इसके साथ ही, चीन ने भी अपने सैनिकों और हथियारों की तैनाती में इज़ाफा किया, जिससे सीमा पर स्थायी तनाव की स्थिति बनी रही।

विशेषज्ञों का मानना है कि चीन सीमा क्षेत्रों में “सलामी स्लाइसिंग” रणनीति अपनाता है, जिसके अंतर्गत वह धीरे-धीरे छोटे भूभागों पर कब्ज़ा करता है और फिर उस स्थिति को स्थायी करने का प्रयास करता है (नीता लाल, 2016)। भारत इस प्रकार की रणनीति को ध्यान में रखते हुए अब केवल सैन्य उत्तर तक सीमित न रहकर कूटनीतिक स्तर पर भी मजबूत प्रतिक्रिया दे रहा है। QUAD, BIMSTEC जैसे मंचों में सक्रिय भागीदारी भारत की बहुपक्षीय रणनीति का हिस्सा बन चुकी है (फेइहोंग झा, 2025)।

सीमा विवादों की प्रकृति अब केवल पारंपरिक सैन्य गश्त या कूटनीतिक वार्ताओं तक सीमित न रहकर इसमें तकनीकी निगरानी, सैटेलाइट इंटेलिजेंस और साइबर वॉरफेयर जैसे नए आयाम भी शामिल हो गए हैं। भारत ने पूर्वी लद्दाख, सिक्किम और अरुणाचल क्षेत्रों में विशेष रूप से निगरानी और कम्युनिकेशन व्यवस्था को मज़बूत किया है, जबकि चीन ने इन क्षेत्रों में सड़क निर्माण और मोबाइल संचार टावरों की तैनाती के ज़रिए अपनी पकड़ मजबूत की है। वर्ष 2021 के बाद दोनों देशों ने सेना हटाने की प्रक्रिया को लेकर कई दौर की वार्ताएँ कीं, लेकिन दोनों पक्षों के बीच “सहमति की अस्पष्टता” और “ज़मीनी स्थिति की जटिलता” समाधान में बड़ी बाधाएँ बनी रहीं। नीचे दी गई तालिका भारत और चीन के बीच सीमा संघर्षों की प्रमुख घटनाओं, क्षेत्र और हताहतों का एक तुलनात्मक विवरण देती है, जिससे पाठक को समकालीन तनाव की गंभीरता का बेहतर अनुमान हो सके:

सारणी 2 : भारत-चीन के बीच सीमा संघर्ष विवरण				
वर्ष	घटना	स्थान	भारतीय हताहत	चीनी हताहत (अनुमानित)
1962	भारत-चीन युद्ध	अक्साई चिन, नेफा	~1383	~722
2013	देपसांग घुसपैठ	लद्दाख	0	0
2017	डोकलाम गतिरोध	सिक्किम-भूटान सीमा	0	0
2020	गलवान संघर्ष	गलवान घाटी, लद्दाख	20	4 (चीन का दावा), ~40 (रिपोर्ट्स)

5. हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक में शक्ति संतुलन

हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन को लेकर भारत और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ती जा रही है। चीन ने पिछले कुछ वर्षों में दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर में अपनी नौसेना उपस्थिति को बढ़ाया है, जिससे इस क्षेत्र में उसकी सैन्य और व्यापारिक पकड़ मज़बूत हुई है (गुप्ता, 2015)। चीन के द्वारा पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह, श्रीलंका में हम्बनटोटा बंदरगाह और मालदीव में आधारभूत ढाँचों में भारी निवेश इस रणनीति का हिस्सा हैं, जो 'स्ट्रिंग ऑफ पर्स' नीति के अंतर्गत भारत को घेरने का प्रयास है (हर्ष वी पंत, 2021)।

भारत इस बढ़ते दबाव को संतुलित करने के लिए अपनी समुद्री रणनीति को सक्रिय रूप से मज़बूत कर रहा है। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह को नौसैनिक संचालन का प्रमुख केंद्र बनाना, और QUAD जैसे बहुपक्षीय मंचों के ज़रिए अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ समुद्री सुरक्षा सहयोग को आगे बढ़ाना, भारत की रणनीतिक योजना का हिस्सा है (फेड़होंग झा, 2025)। यह सहयोग न केवल समुद्री मार्गों को स्वतंत्र और खुला रखने के लिए है, चीन की बढ़ती दखलंदाजी को भी नियंत्रित करने का एक प्रयास है (जोरावर दौलत सिंह, 2020)।

भारत की "एक्ट ईस्ट नीति" के अंतर्गत वियतनाम, इंडोनेशिया और फिलीपींस जैसे देशों के साथ सामुद्रिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे दक्षिण चीन सागर में चीन की शक्ति को चुनौती दी जा सके (Drishti IAS, 2025)। इसके साथ ही भारत ने हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) और इंडो-पैसिफिक ओशियन इनिशिएटिव जैसे मंचों पर नेतृत्वकारी भूमिका निभाने की कोशिश की है, जिससे क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में वह केंद्रीय भूमिका निभा सके। चीन का उद्देश्य इस क्षेत्र में केवल व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण तक सीमित न होकर वह इन रास्तों को रणनीतिक लाभ के रूप में भी देखता है।

इन रणनीतिक प्रयासों के समानांतर, चीन की "नौसेना विस्तार नीति" ने हाल के वर्षों में कई ऐसे कदम उठाए हैं, जिससे वह अपने प्रभाव क्षेत्र को हिंद महासागर से लेकर अफ्रीकी तटों तक विस्तारित कर सके। जिबूती में चीनी नौसैनिक अड्डा इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, जो न केवल अफ्रीका में चीनी व्यापारिक सुरक्षा का आधार है, वह हिंद महासागर में स्थायी सैन्य उपस्थिति की रणनीति का भी हिस्सा है (श्याम सरण, 2022)। इस पृष्ठभूमि में भारत ने भी मॉरीशस, सेशेल्स, ओमान जैसे देशों के साथ सामरिक सहयोग बढ़ाया है, ताकि वह हिंद महासागर में चीन के प्रभाव को संतुलित कर सके। इस रणनीति के तहत भारत द्वारा समुद्री डोमेन अवेयरनेस (MDA), तटीय निगरानी, और मानव संसाधन सहयोग पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिससे क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा ढांचा मज़बूत हो सके।

वहीं भारत की "सागर" नीति—जिसका अर्थ है 'सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रीजन'—के माध्यम से भारत ने यह स्पष्ट किया है कि हिंद महासागर न केवल व्यापारिक सामरिक और मानवीय सहयोग का भी मंच है। इस नीति के अंतर्गत भारत ने क्षेत्रीय देशों को समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहायता और

आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सहयोग की पेशकश की है (Drishti IAS, 2025)। इस क्षेत्रीय दृष्टिकोण के विपरीत, चीन की नीति अधिक केंद्रीकृत और रणनीतिक लाभ आधारित दिखाई देती है। ऐसे में भारत का बहुपक्षीय और सहभागितामूलक दृष्टिकोण क्षेत्रीय देशों के लिए अधिक आकर्षक और संतुलनकारी बनता जा रहा है। इससे यह खंड न केवल वैश्विक मंचों पर भारत-चीन के दृष्टिकोण से जुड़े अगले खंड से भी जुड़ता है, वह भारत की समुद्री रणनीति को एक परिपक्व और दीर्घकालिक सोच में बदलता है।

6. वैश्विक मंचों पर दृष्टिकोण: संयुक्त राष्ट्र, BRICS, WTO

भारत और चीन के बीच वैश्विक मंचों पर प्रतिस्पर्धा अब केवल क्षेत्रीय राजनीति तक सीमित न रहकर यह अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं जैसे संयुक्त राष्ट्र (UN), ब्रिक्स (BRICS) और विश्व व्यापार संगठन (WTO) तक पहुँच चुकी है। इन मंचों पर दोनों देश न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना चाहते हैं, वे विकासशील देशों की आवाज़ बनने और वैश्विक शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में झुकाने का प्रयास भी करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र में भारत लगातार अपनी स्थायी सदस्यता के लिए प्रयासरत है, जबकि चीन इस मांग को खुलकर समर्थन नहीं देता। हाल के वर्षों में भारत को फ्रांस, अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों का समर्थन मिला है, लेकिन चीन की मौन या प्रतिरोधात्मक नीति भारत के प्रयासों में एक बड़ी बाधा बनी हुई है (Drishti IAS, 2025)। चीन यह नहीं चाहता कि एशिया में एक और शक्ति उसके बराबर स्थायी रूप से स्थापित हो, जिससे उसके प्रभाव में कमी आए। इसके अतिरिक्त, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में कई बार चीन ने भारत से जुड़े मुद्दों पर पाकिस्तान का अप्रत्यक्ष समर्थन किया है, जैसे कश्मीर और आतंकवाद पर प्रस्तावों को तकनीकी आधार पर रोकना (फेड्रॉग झा, 2025)।

BRICS मंच पर दोनों देशों की भूमिका विशेष है क्योंकि यह मंच पश्चिमी वर्चस्व के विरुद्ध एक वैकल्पिक आर्थिक व्यवस्था को प्रोत्साहित करता है। भारत और चीन दोनों ही इस संगठन के संस्थापक सदस्य हैं, लेकिन उनकी प्राथमिकताएँ और रणनीतियाँ अलग-अलग रही हैं। चीन इस मंच का उपयोग अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) को बढ़ावा देने के लिए करता है, जबकि भारत इस मंच को दक्षिण-दक्षिण सहयोग और बहुधुवीयता के दृष्टिकोण से देखता है (जोरावर दौलत सिंह, 2020) और ब्रिक्स बैंक (NDB) की स्थापना में दोनों देशों ने समान सहयोग दिया है, लेकिन निवेश की दिशा और नेतृत्व में चीन का वर्चस्व अधिक दिखाई देता है।

WTO में भी भारत और चीन दोनों विकासशील देशों की ओर से बात करते हैं, लेकिन कई बार उनके व्यापारिक हित आपस में टकराते हैं। उदाहरण के लिए कृषि सब्सिडी और डाटा लोकलाइजेशन जैसे मुद्दों पर भारत और चीन की राय में अंतर रहा है। भारत खुली व्यापार प्रणाली की बात करता है, लेकिन स्थानीय उद्योगों को भी सुरक्षा देना चाहता है, जबकि चीन का झुकाव अधिकतर वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और उत्पादन नेटवर्क के नियंत्रण की ओर रहता है (श्याम सरण, 2022)। इसके बावजूद, अमेरिका और यूरोपीय देशों के संरक्षणवादी रवैये के सामने भारत और चीन ने कई बार एक साझा मोर्चा भी बनाया है।

इन वैश्विक मंचों पर भारत और चीन की यह प्रतिस्पर्धा केवल वैचारिक नहीं, रणनीतिक भी है। दोनों देश दुनिया में विकासशील देशों के प्रतिनिधि के रूप में अपनी-अपनी स्थिति को मज़बूत करना चाहते हैं। इसलिए इन मंचों पर उनके दृष्टिकोण और रणनीति के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यह संघर्ष केवल दक्षिण एशिया की सीमाओं तक सीमित नहीं, वैश्विक नेतृत्व की दिशा में भी निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

भारत और चीन के बीच वैश्विक नेतृत्व की यह होड़ केवल UNSC, BRICS और WTO तक सीमित न रहकर अब यह G20 और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) जैसे मंचों पर भी स्पष्ट हो गई है। भारत ने हाल ही में G20 की अध्यक्षता को उपयोग कर वैश्विक दक्षिण के मुद्दों, जलवायु न्याय और डिजिटल समावेशन को सामने लाने का प्रयास किया, वहीं चीन ने इसे पश्चिमी देशों के वर्चस्व का मंच कहकर इसकी आलोचना की। इसी प्रकार, SCO में भारत जहाँ आतंकवाद विरोधी सहयोग और कनेक्टिविटी पर बल देता है, वहीं चीन इसे अपनी BRI रणनीति के विस्तार के लिए प्रयोग करता है। इन मंचों पर दोनों देशों के दृष्टिकोण भिन्न हैं – भारत समावेशी वैश्विक व्यवस्था की बात करता है, जबकि चीन अपने आर्थिक हितों के अनुरूप एजेंडा सेट करने में रुचि रखता है।

विश्व बैंक, IMF और एशियाई विकास बैंक जैसे वैश्विक वित्तीय संस्थानों में भी भारत और चीन की उपस्थिति एक-दूसरे के प्रभाव क्षेत्र को चुनौती देती रही है। जहाँ भारत इन संस्थानों में अधिक प्रतिनिधित्व और पारदर्शिता की माँग करता है, वहीं चीन ने **AIIB (Asian Infrastructure Investment Bank)** और **NDB (New Development Bank)** जैसे वैकल्पिक वित्तीय ढांचे खड़े कर लिए हैं, जिनमें उसका निवेश और नियंत्रण अधिक है। भारत इन संस्थाओं में साझेदारी तो करता है, लेकिन वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि इनका उपयोग किसी एक देश के राजनीतिक उपकरण के रूप में न हो। इस दृष्टिकोण में भारत और चीन की कूटनीतिक सोच का अंतर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है – एक ओर लोकतांत्रिक बहुधुवीयता और दूसरी ओर केंद्रीकृत रणनीतिक संरचना।

7. मीडिया, जनमत और सॉफ्ट पावर

भारत और चीन के बीच चल रही रणनीतिक प्रतिस्पर्धा केवल सीमाओं, व्यापार और सैन्य क्षेत्र तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह अब उन क्षेत्रों में पहुँच गई है जो सीधे जनता और वैश्विक धारणा को प्रभावित करते हैं - जैसे कि मीडिया, जनमत और सॉफ्ट पावर। इन माध्यमों के जरिए दोनों देश न केवल अपने राष्ट्रीय हितों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करते हैं, बल्कि वैश्विक छवि निर्माण की दौड़ में एक-दूसरे को चुनौती भी देते हैं।

चीन ने पिछले कुछ वर्षों में “सॉफ्ट पावर” को एक रणनीतिक उपकरण की तरह प्रयोग किया है। उसने कंप्यूशियस संस्थानों, चीन-केंद्रित अंतरराष्ट्रीय समाचार चैनलों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर दक्षिण एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका जैसे क्षेत्रों में अपनी वैचारिक उपस्थिति मज़बूत की है (श्याम सरण, 2022)। वहीं, भारत ने योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड, अंतरराष्ट्रीय छात्रवृत्तियाँ और

लोकतांत्रिक मूल्यों को वैश्विक मंचों पर आगे रखकर एक अलग तरह की सॉफ्ट पावर नीति अपनाई है (Drishti IAS, 2025)।

गलवान संघर्ष के दौरान यह देखा गया कि दोनों देशों की मीडिया ने अपने-अपने राष्ट्रवाद को प्राथमिकता दी, जिससे जनता के बीच एक-दूसरे के प्रति नकारात्मक भावनाएँ उभरीं। चीन की मीडिया राज्य-नियंत्रित है, जो सरकार के अनुसार जनमत को निर्देशित करती है, जबकि भारत में मीडिया स्वतंत्र होने के बावजूद अक्सर युद्धोन्मुखी रवैया अपनाता है, विशेषकर जब राष्ट्रीय सम्मान और सुरक्षा का प्रश्न हो (जाखड़, 2020)।

इस सन्दर्भ में नीचे दी गई तालिका भारत और चीन की सॉफ्ट पावर व मीडिया रणनीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती है:

सारणी 3 : सॉफ्ट पावर व मीडिया रणनीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण		
तत्व	भारत	चीन
सॉफ्ट पावर स्रोत	योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड, लोकतंत्र, विविध संस्कृति	लोकतांत्रिक, सहयोगी शक्ति
प्रमुख वैश्विक अभियान	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, 'नेबरहुड फर्स्ट', स्टडी इन इंडिया	बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, चाइना मीडिया ग्रुप वैश्विक विस्तार
मीडिया नियंत्रण	स्वतंत्र लेकिन धुवीकृत	राज्य-नियंत्रित, एकमुखी
जनमत निर्माण का तरीका	बहस, संवाद और सोशल मीडिया की सक्रियता	कंप्यूशियस संस्थान, चीनी भाषा, शाही परंपरा, तकनीकी निवेश
वैश्विक छवि निर्माण	लोकतांत्रिक, सहयोगी शक्ति	नियंत्रित सूचना और प्रचार आधारित संदेश

जहाँ चीन अधिक संगठित ढंग से अपनी छवि का प्रचार करता है, वहीं भारत की रणनीति अपेक्षाकृत नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है। हालाँकि, दोनों ही देश सॉफ्ट पावर के ज़रिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे यह आयाम अब केवल सांस्कृतिक नहीं रणनीतिक हो गया है (फेइहोंग झा, 2025)।

8. निष्कर्ष एवं सुझाव

भारत और चीन के बीच चल रही प्रतिस्पर्धा अब केवल पारंपरिक सीमा विवादों और व्यापारिक संबंधों तक सीमित न रहकर यह बहुआयामी रूप ले चुकी है। रणनीतिक संसाधनों की दौड़, हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सैन्य और नौसैनिक संतुलन, वैश्विक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व, और सॉफ्ट पावर के क्षेत्र में प्रभाव स्थापित करने की कोशिश—ये सभी आयाम इस संघर्ष को एक नई दिशा में ले जा रहे हैं।

चीन की आर्थिक आक्रामकता, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव जैसे प्रयासों और वैश्विक मंचों पर सक्रियता ने भारत की पारंपरिक क्षेत्रीय भूमिका को चुनौती दी है। वहीं भारत ने भी अपनी विदेश नीति, कूटनीतिक सहयोग, सैन्य तैयारी और सांस्कृतिक प्रभाव के माध्यम से संतुलन बनाने का भरसक प्रयास किया है। इस प्रतिस्पर्धा में मीडिया और जनमत की भूमिका भी अत्यंत निर्णायक बन गई है, जहाँ दोनों देश अपनी छवि को गढ़ने और वैश्विक समर्थन हासिल करने की होड़ में लगे हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत-चीन प्रतिस्पर्धा न केवल दक्षिण एशिया की भू-राजनीति को प्रभावित कर रही है, वह वैश्विक शक्ति संरचना को भी नए सिरे से परिभाषित करने की दिशा में अग्रसर है।

भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह चीन के प्रभाव का संतुलन स्थापित करने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाए, जिसमें केवल सैन्य और आर्थिक उपायों तक सीमित न रहकर सॉफ्ट पावर, कूटनीतिक भागीदारी और जनमत निर्माण की प्रक्रियाएँ भी शामिल हों। भारत को चाहिए कि वह अपने पारंपरिक पड़ोसियों के साथ संबंधों को मज़बूत करे और दक्षिण एशिया में चीन के प्रभाव को संतुलित करने के लिए सांस्कृतिक, शैक्षणिक और तकनीकी सहयोग को प्राथमिकता दे। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को विकासशील देशों की नेतृत्वकारी भूमिका निभाने की दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए, जिससे वह चीन की एकध्रुवीय नीति के मुकाबले एक समावेशी, लोकतांत्रिक और सह-अस्तित्व पर आधारित मॉडल प्रस्तुत कर सके। साथ ही, भारत को मीडिया और वैश्विक संवाद के स्तर पर अपने दृष्टिकोण को प्रभावशाली और स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, ताकि अंतरराष्ट्रीय समुदाय में उसकी स्थिति अधिक मज़बूत हो। इसलिए यह प्रतिस्पर्धा केवल वर्चस्व की नहीं, दीर्घकालिक स्थायित्व, विश्वास और सहयोग की रणनीति के साथ आगे बढ़ने की चुनौती भी है।

संदर्भ सूची

- 1) जाखडप. (2020). भारत-चीन सीमा विवाद: वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कौन है कितना ताकतवर. *BBC News हिंदी*. <https://www.bbc.com/hindi/india-53594255>
- 2) न्यूजस. (2022). 1962 का भारत-चीन युद्ध, जिसने विदेश नीति को नया आकार दिया, सुरक्षा नीति में हुए कई प्रमुख बदलाव. *ABP Live*. <https://www.abplive.com/explainer/india>
- 3) सैनग. (2022). भारत-चीन सीमा विवाद: अक्सई चिन से तवांग तक, कहां-कहां है तनाव. *BBC News हिंदी*. <https://www.bbc.com/hindi/international-63956735>
- 4) कार्ल जैकहॉन. डहलमैन. (2022). चीन और भारत: उभरती हुई तकनीकी शक्तियां. *Issues in Science and Technology*. <https://issues-org.translate>.
- 5) भारत-चीन संबंधों की जटिलता और भविष्य - Drishti IAS. (2025). *Drishti IAS*. <https://www.drishtiias.com>
- 6) फेइहोंगज. (2025). China-India ties across the past and into the future. *The Hindu*. <https://www.thehindu-com.translate>.

- 7) Rahman, S. A. (2023). India protests Chinese map claiming disputed territories. *Voice of America*. <https://www.voanews.com/a/india-protests-chinese-map-claiming-disputed-territories/7246891.html>
- 8) Shivamurthy Andria. Gautama., (2022). भारत-चीन प्रतिस्पर्धा: 'पड़ोसी देशों का दृष्टिकोण और उन पर पड़ता प्रभाव'. *Observer Research Foundation*. <https://www.orfonline.org>
- 9) Singh, Harbinger. (2020). भारत और चीन के बीच पंचशील समझौता क्या है? *Jagranjosh.com*. <https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/>

पुस्तकें :-

- 1) लाल, नीता, 'इंडिया एंड चाइना ए न्यू एरा आफ स्ट्रैटेजिक पार्टनर्स', इंटर प्रेस सर्विस, न्यूज़ एजेंसी, 2016
- 2) चंद, मनीष, 'भारत और चीन संबंध बदलते रिश्ते' योजना, जुलाई-2015
- 3) गुप्ता, माया, 'भारत चीन संबंधों में संघर्ष - दक्षिण चीन सागर', वर्ल्ड फोकस, दिसंबर, 2015
- 4) कल्हा, रंजीत सिंह, 'इंडिया चाइना बाउंड्री ईश्यूज: क्वेस्ट फॉर सेटलमेंट', पेंटागन प्रेस, नई दिल्ली, 2014
- 5) श्याम सरण, 'चीन, भारत और विश्व को कैसे देखता है', जगगरनोट पब्लिशर्स, 2022
- 6) मरूफ रजा, 'कंटेस्टेड लैंड्स: इंडिया, चाइना एंड द बाउंड्री डिस्प्यूट', वेस्टलैंड, 2022
- 7) हर्ष वी पंत, 'पॉलिटिक्स एंड जियोपॉलिटिक्स: डिफ़िनिंग इंडियास नेबरहुड चैलेंज', रूपा पब्लिकेशंस, 2021
- 8) जोरावर दौलत सिंह, 'इंडिया चाइना रिलेशंस इन ए मल्टीपोलर वर्ल्ड', मैकमिलन, 2020